प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

एक लक्ष्य एक समय सीमा के साथ देखा गया स्वप्न है।
-नेपोलियन हिल, *अमेरिकी लेखक*

भारत ने बीजिंग में हो रहे शीतकालीन ओलंपिक के उद्घाटन और समापन समारोह का राजनयिक बहिष्कार करने का फैसला कर चीन को कड़ा संदेश देने के साथ ही गलवान घाटी में हुई झड़प को वैश्विक मुद्दा बनाने की उसकी साजिश को भी ध्वस्त कर दिया है।

चीन को सख्त संदेश

बीजिंग में हो रहे शीतकालीन ओलंपिक के उद्घाटन और समापन समारोह का राजनयिक बहिष्कार करने का फैसला कर भारत ने चीन को कड़ा संदेश देने के साथ ही गलवान घाटी में दोनों देशों के जवानों के बीच हुई झड़प को वैश्विक मुद्दा बनाने की उसकी साजिश को भी ध्वस्त कर दिया है। चीन ने ओलंपिक की मशाल यात्रा की शुरुआत 15-16 जून, 2020 में पूर्वी लद्धाख की गलवान घाटी में हुई झड़प में बुरी तरह घायल पीएलए के कमांडर क्वी फाबाओ से करवाने का फैसला कर एक नया विवाद खड़ा करने और ओलंपिक का राजनीतिकरण करने की कोशिश की है। उसकी इस नीयत का पता इससे भी चलता है कि वह दोनों देशों के बीच हो रही सैन्य कमांडर स्तर की वार्ता में लगातार बाधाएं डाल रहा है, जिसके कारण चौदहवें दौर की वार्ता अधूरी रही है। ताजा विवाद उसकी कुत्सित रणनीति की अगली कड़ी है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट कर दिया है कि शीतकालीन ओलंपिक के उद्घाटन और समापन समारोह में भारत के कार्यवाहक राजदूत हिस्सा नहीं लेंगे। यह चीन को उसी की भाषा में करारा जवाब है। पूर्वी लद्धाख में हुई झड़प को लेकर उसका एक और झूठ भी अभी उजागर हुआ है। चीन ने दावा किया था कि झड़प में उसके चार जवान मारे गए थे, लेकिन ऑस्ट्रेलिया के एक अखबार ने अपनी एक खोजी रिपोर्ट में दावा किया है कि वहां पीएलए के कम से कम 42 जवान मारे गए थे। यह अच्छी बात है कि अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे देश भी चीन की चाल को समझ रहे हैं। इन देशों ने भी शुक्रवार से बीजिंग में शुरू हुए शीतकालीन ओलंपिक का बहिष्कार करने का फैसला किया है, बेशक उसके पीछे उइघुर मुस्लिमों का उत्पीड़न सहित कई अन्य कारण भी हैं। मगर अमेरिका ने गलवान घाटी में घायल चीनी कमांडर को मशाल वाहक बनाए जाने पर भारत की प्रतिक्रिया का समर्थन किया है और कहा है कि वह चीन की धमकी के खिलाफ भारत के साथ है। बेशक, यह एक कूटनीतिक कदम है। यह भी ध्यान रखना होगा कि रूस चीन के साथ है और अमेरिका तथा रूस के बीच यूक्रेन को लेकर तनाव न्यूनतम स्तर पर है। रूस से भारत के ऐतिहासिक रिश्ते हैं। दोहराने की जरूरत नहीं कि भारत अपनी संप्रभुता की रक्षा करने में और चीन को जवाब देने में सक्षम है।

मजबूत होती केंद्रीकृत राजनीति

कांग्रेस के कमजोर होने पर दूसरी राजनीतिक पार्टियों को ज्यादा लोकतांत्रिक होना चाहिए, इसके बजाय क्षेत्रीय राजनीति में प्रचलित केंद्रीकृत राजनीति राष्ट्रीय राजनीति में भी मजबूत हो रही है। केंद्रीकरण की इस राजनीति में पार्टी की लोकप्रियता उसके कामकाज के बजाय उसके मुख्य नेता की छवि पर निर्भर करती है।

पिछले महीने कांग्रेस के पूर्व सांसद आरपीएन (कुंवर रतनजीत प्रताप नारायण) सिंह दलबदल कर कांग्रेस की प्रतिद्वंद्वी पार्टी भाजपा में शामिल हो गए। आरपीएन सिंह साधारण कांग्रेसी नहीं थे। वह कांग्रेस के कई बार विधायक, केंद्रीय मंत्री तथा युवा कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी के करीबी माने जाते थे। वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य में, खासकर पश्चिमी लोकतंत्र में एक बड़ी पार्टी के बेहद महत्वपूर्ण सदस्य का इस तरह दलबदल करना दुर्लभ है। पर दलबदल भारत की राजनीतिक संस्कृति में इस तरह रच-बस गया है कि यह 'आयाराम-गयाराम' के रूप में जाना जाता है। पिछले पांच साल में 417 विधायकों या सांसदों ने (जो भारत में विधानमंडल की कुल 4,664 सीटों का नौ प्रतिशत है) दलबदल कर दोबारा चुनाव लड़े हैं। दलबदल की इतनी ऊंची दर ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील लोकतंत्रों में भी देखी गई है। भारतीय राजनीति में पार्टी विधायकों और सदस्यों में स्थायित्व के इस अभाव को मैं कमजोर पार्टीगत जुड़ाव के रूप में देखता हूं।

नीलांजन सरकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौर में आर्थिक और राजनीतिक केंद्रीकरण की प्रवृत्ति पर बेशक कई विद्वानों ने ध्यान दिया है, पर मैं बताना चाहता हूं कि केंद्रीकरण की राजनीति कमजोर पार्टीगत जुड़ाव का स्वाभाविक नतीजा है और जो भारतीय राजनीति में बीमारी की तरह है। केंद्रीकरण की राजनीति के जरिये एक पार्टी के नेता और मतदाताओं में सीधा राजनीतिक संबंध बनाना दलबदल से मतदाताओं पर पड़ने वाले प्रतिकूल असर को कम करता है। भारत में क्षेत्रीय पार्टियों ने सबसे पहले इस तरह के राजनीतिक केंद्रीकरण को अंजाम दिया, और मोदी खुद गुजरात के सफलतम मुख्यमंत्री रह चुके हैं। इस तरह मौजूदा स्थिति भारत की केंद्रीय राजनीति के 'क्षेत्रीयकरण' को प्रतिबिंबित करती है-जो राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक प्रणाली की शुरुआत है।

कभी बेहद मजबूत रही कांग्रेस पार्टी 1990 के दशक में जब दरकने लगी, तब कई क्षेत्रीय पार्टियों ने चुनावी सफलता का परिचय दिया। वर्ष 1986 में राज्य स्तर पर एक विधायक के सामने जहां चार पार्टियों में जाने का विकल्प था, वहीं 1996 में राज्य स्तर पर दलों की संख्या बढ़कर आठ हो गई। जनता दल (सेक्युलर), जनता दल (यूनाइटेड), एनसीपी, राजद और तृणमूल कांग्रेस इनमें सबसे सफल नई क्षेत्रीय पार्टियां थीं। इन नई क्षेत्रीय पार्टियों में से कई 'पारिवारिक फर्म' की तरह हैं, जिसमें पार्टी पर उनके संस्थापकों और उनके परिवारों का ही नियंत्रण है। जब कांग्रेस के कमजोर होने से भारतीय राजनीति को ज्यादा लोकतांत्रिक होना चाहिए था, तब इस राजनीतिक दुष्प्रवृत्ति की व्याख्या भला कैसे की जाए?

जब संभावनाशील राजनेता कमजोर पार्टीगत जुड़ाव का परिचय देते हैं, तब नेताओं के दलबदल का खामियाजा नई पार्टियों को भुगतना पड़ता है। इसी कारण नई पार्टियां अलग-अलग नेताओं की लोकप्रियता के आधार पर आगे बढ़ने के बजाय केंद्रीकरण की राजनीति पर चलती हैं, जिससे कि पार्टी के मुख्य नेता और मतदाताओं के बीच सीधा रिश्ता बन जाए-जिससे कि पार्टी की स्वीकार्यता और उसके चुनावी प्रदर्शन पर दूसरे नेताओं का कम असर हो। इसके तहत वे अपने नेता की ईश्वरीय छवि बनाने के लिए राज्य के संसाधनों, पार्टी संगठन और मीडिया का भरपूर इस्तेमाल करती हैं।

राज्य स्तरीय चुनावों में तो यह प्रवृत्ति पहले से ही अस्तित्व में है, भाजपा और मोदी के केंद्रीय सत्ता में होने के कारण अब राष्ट्रीय राजनीति में भी यह प्रवृत्ति देखी जा रही है। इस राजनीतिक प्रणाली में पार्टी की लोकप्रियता उसके वादों और कामकाज के बजाय उसके नेता की छवि पर निर्भर करती है। इस तरह से देखें, तो राजनीतिक केंद्रीकरण उस राजनीतिक धारणा के विपरीत है, जिसमें देश के नागरिक आर्थिक स्थिति के लिए अपने जनप्रतिनिधियों को सीधे-सीधे जिम्मेदार ठहराते हैं।

केंद्रीकरण की राजनीति में तकनीकी बदलाव ने बड़ी भूमिका निभाई है, जिसके तहत नागरिकों तक उनके लाभों का सीधे तकनीकी हस्तांतरण संभव हो गया है। वस्तुतः इस नई खूबी ने केंद्रीकरण की राजनीति को मजबूत बनाने में बड़ी भूमिका निभाई है, जिसके तहत जनता के लिए शुरू की कई कल्याणकारी योजनाएं स्थानीय नेताओं के बजाय मुख्य पार्टी नेता के इर्द-गिर्द ही केंद्रित रहती हैं। भारतीय संदर्भ में दो मुख्य नीतिगत एवं तकनीकी बदलावों के जरिये यह संभव हुआ है। पहला है आधार, और दूसरा है भारत के नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ने वाले जन-धन खाते, जिनके जरिये सरकार अनेक सरकारी योजनाओं का धन सीधे नागरिकों के खातों में भेज सकती है। इस व्यवस्था ने मध्यस्थों और उन स्थानीय नेताओं को अप्रासंगिक बना दिया है, जो पहले नागरिकों को मिलने वाले सरकारी योजनाओं के लाभ का श्रेय खुद लेते थे। इसके अलावा विज्ञापनों, मीडिया प्रबंधन और पार्टी संगठन पर नियंत्रण के जरिये अपने नेता की शानदार ब्रांडिंग की जाती है, नतीजतन कल्याणकारी योजनाओं को लक्षित नागरिकों तक पहुंचाने का उन्हें इतना श्रेय मिलता है, जितना पहले कभी नहीं मिलता था। पार्टी के टिकट केंद्रीकृत तरीके से बांटे जाते हैं और किसी प्रत्याशी का दोबारा मनोनयन भी पार्टी नेतृत्व पर निर्भर करता है।

इसका अर्थ यह है कि केंद्रीकृत राजनीति में, जिसमें आंतरिक लोकतंत्र नहीं होता, स्थानीय समीकरणों की उपेक्षा की जाती है और स्थानीय नेताओं को लंबे समय तक बर्दाश्त नहीं किया जाता। वर्ष 2014 में जब मोदी सत्ता में आए, तब एक भाजपा सांसद को दोबारा टिकट दिए जाने की संभावना 53 फीसदी ही थी। सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में 1977 से ही पहला चुनाव जीतने वाले विधायक 60 फीसदी होते रहे हैं, जबकि हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में पहला चुनाव जीतने वाले विधायकों का आंकड़ा लगभग 78 फीसदी था। व्यापक अर्थ में केंद्रीकृत राजनीति एक नेता और एक पार्टी से अलग हटकर दरअसल एक ढांचागत प्रवृत्ति है, जो अब भारत में फल-फूल चुकी है।

-लेखक नई दिल्ली स्थित सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च में सीनियर फेलो हैं।

विद्यानिवास मिश्र
(1925-2005)

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

सचमुच यदि वसंत आए, तरुणाई में नई तरुणाई भरने के लिए, ठूंठ को भी पल्लवित करने के लिए और पल्लवित को पुष्पित करने के लिए, तो उसका आना आने की तरह लगे।

वसंत आए तो तरुणाई में नई तरुणाई भरने के लिए

वसंत के रोएं-रोएं रो उठते हैं, जब उसे लगता है कि अपनी सहकार मंजरियों से उसे तिलांजलि का कार्य लेना है। तो स्वागत-गान गाने से क्या लाभ? तड़पते हुए को और तड़पाने से क्या लाभ? अभी कहीं से आशावादिता की ढोल बांधकर गाल बजाने वाले कोई पंडित चिल्ला उठेंगे, यह अभारतीय मनोवृति है कि निराशावादी गीतों से सांस्कृतिक अंतर्जीवन को बेहोशी की सुई दी जाए। हां, इस बेहोशी की सुई की, इस अवसाद की आज नितांत आवश्यकता है। उल्लास की अनमनी रंगरलियों से करुणा की सहज होली का रंग चोखा पड़ता है। भविष्य की आशातंतुओं की मनोग्रंथियों से विकृत आकृतियों को जब हम विश्वविद्यालयों की तथाकथित लावण्यवीथियों में ऊंची एड़ियों के नीचे घुसते देखते हैं, जब हम स्वर्णकिरणों की मृगतृष्णा में आकुल जनों के हर्षोन्माद के छूछे गीत सुनते हैं और 'पेरिस की सांझ' की उन्मद गंध की झीनी चादर चीरकर जब हम गलित जीवन की संड़ाध में जा पहुंचते हैं, तब हमें बरबस रुलाई आती है कि वसंत क्यों आए। सचमुच यदि वसंत आए, तरुणाई में नई तरुणाई भरने के लिए, ठूंठ को भी पल्लवित करने के लिए और पल्लवित को पुष्पित करने के लिए, तो उसका आना आने की तरह लगे। पर यदि उसके आने से दखिनैय बयार की लहक पाकर अंदर सुलगी हुई आग को दहकने का और बल मिले, यदि उसके आने से रति का उतार और अरति का चढ़ाव हो और यदि उसके आने से 'नयौ पातन को उनयौ पतझार' हो, तो उसका न आना ही अच्छा। इसलिए धरती गा उठी है, *फूलै फूल फरै जन तरुवर राग फाग काउ गावै।* राग फाग ही तो उत्तेजना का मुख्य कारण है। भीतर से एक प्रश्न उठ रहा है कि वसंत आता भी है कि तुम बार-बार 'वसंत न आवै' का हल्ला मचा रहे हो? आता है, तुहिन हिमपात लिए जाड़ा और झंझावात लिए पतझर। इनके आगमन के तुमुल कोलाहल में वसंत यदि आके, रोके चला जाता होगा तो नहीं जानता, पर कभी उसका भी आना आने की तरह लगता? अभी आम बौराए नहीं कि पुरवैया की झकोर से लसिया-लसिया कर बौर धूलि में लौटने लगे। रही महुआ के कूंची की बात, सो मधुक-माला की प्रतिष्ठा संयोगिता के स्वयंवर तक ही रही, उसके बाद तो सिवाय अप्रतिष्ठा और अपयश के इस मधुक को कुछ मिला नहीं। हां, भले याद आई इस मधुक की। इसके साथ बचपन की एक अत्यंत विनोदभरी स्मृति जुड़ी हुई है। ननिहाल की घटना है। भारत का सबसे प्राचीन ताम्रपत्र जहां प्राप्त हुआ, उस सोहगौरा की बात है। हां, तो कोई अमीनभोजी शिष्य अपने कनफूंकवा गुरु श्री कोदई राम त्रिपाठी को खोजता हुआ इन्हीं बार और महुआ के दिनों में एक बार पहुंचा और पूछ बैठा कि पंडित जी, जिनका नाम 'झिनवा' से पड़ता है (उसने गुरु नाम लेना अशास्त्रसम्मत होने के कारण कोदों के स्थानीय पर्याय झिनवा अर्थात 'महीन चावल' का प्रयोग किया) वे महाराज जी कहां हैं, उसे उत्तर मिला...'अपने मित्र पंडित मतऊराम के साथ आपके श्रीमान कदन्ननामा (कोदई बाबा) सबेरे ही के निकले हुए हैं और इस समय कुशहा टोला के अकेलवा महुआ के पेड़ के नीचे, आमी नदी की मीन जनसंख्या को कम करने का शुभ संकल्प लेकर विराज रहे हैं, वहीं आपको मिलेंगे। तभी से उस मछलीमाही के पुण्यस्थल में स्थित महुए के पेड़ का नाम पड़ गया है मधुकवा महुआ। वसंत के आने के संकेत हमें उन्हीं अमराइयों से मिलेंगे, जिनके भीतर में से 'जड़ता जाड़ विषम उप व्यापा' से ठिठुरते हुए असंख्य जन झांक रहे हैं। वसंत को प्राणान्वित करने वाली बयार उन्हीं चंदन सुरभित मलयांचलों से आने वाली है, जिसमें आज असंख्य फणधरों की ज्वालाएं धधक रही हैं।

भीतर से एक प्रश्न उठ रहा है कि वसंत आता भी है कि तुम बार-बार 'वसंत न आवै' का हल्ला मचा रहे हो? आता है, तुहिन हिमपात लिए जाड़ा और झंझावात लिए पतझर।

गमित रामिलाबेन

मंजिलें और भी हैं

सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर अपने प्रयासों से मैंने आदिवासी क्षेत्रों के करीब नौ गांवों को खुले में शौच से मुक्त करने के अलावा 300 से अधिक स्वच्छता इकाइयां स्थापित की हैं। मेरे प्रयासों के लिए सरकार ने मुझे पद्मश्री से सम्मानित करने की घोषणा की है।

नौ गांवों को खुले में शौच से मुक्त किया

मैं गुजरात में तापी के तपरवाड़ा गांव की निवासी हूं और आदिवासी समुदाय से आती हूं। मेरा गांव पहाड़ी क्षेत्र में पड़ता है, जहां लोगों को सामान्य खरीदारी के लिए भी मैदानी इलाकों तक जाना पड़ता है। मैं शुरू से ही समाज के लिए कुछ करना चाहती थी। जब मैं लोगों को खुले में शौच करते और गंदगी फैलाते देखती थी, तो बहुत दुख होता था। फिर मैंने मन बनाया और इन तमाम तरह की कठिन परिस्थितियों के बीच वर्ष 2014 में समाज सेवा के क्षेत्र में कदम रखा। शुरुआत में मैंने महिलाओं की एक टीम गठित की और खुले में शौच को हतोत्साहित करने और स्वच्छता के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने का अभियान शुरू किया। पहले इसमें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, लेकिन धीरे-धीरे लोगों में जागरूकता आनी शुरू हुई। अपने प्रयासों से आदिवासी क्षेत्रों के करीब नौ गांवों को मैंने खुले में शौच से मुक्त बनाया है और आगे भी इस दिशा में प्रयासरत हूं। समाज के लिए मेरे प्रयासों के लिए सरकार ने मुझे पद्मश्री से सम्मानित करने की घोषणा की है। (विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित)

अपने गांव से शुरुआत

अपने गांव को स्वच्छ बनाने के उद्देश्य के साथ मैंने इस मुहिम की शुरुआत की थी। इसके तहत मैंने न सिर्फ स्वच्छता इकाइयों की स्थापना की, बल्कि अपने समूह के साथ इस बात पर भी नजर रखी कि कोई खुले में शौच न करे। मेरी इस पहल के साथ अब क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण पर भी जोर पड़ा है। अब मैं गांवों को खुले में शौच से मुक्त करने की सरकार की नीति के साथ इस दिशा में और तेजी से काम कर रही हूं।

बहुत काम करने हैं

समाज सेवा का काम करते हुए मुझे सात साल से अधिक हो गए हैं। लेकिन अब भी बहुत ऐसे काम हैं, जो मैं करना चाहती हूं। जैसे कि अपने क्षेत्र में पेयजल की समस्या को देखते हुए अब मैं इस मोर्चे पर काम करना चाहती हूं, जिससे आसपास के लोगों को स्वच्छ पेयजल मिल सके।

मिला सम्मान

समाज के लिए किए गए मेरे काम की सराहना होते देखकर आज मुझे बहुत खुशी होती है। मुझे उम्मीद है कि मेरे काम से लोग प्रेरणा लेकर इस दिशा में आगे और महत्वपूर्ण काम करेंगे। मेरे कामकाज के लिए मुझे कई लोगों और संस्थाओं ने तो सम्मानित किया ही है, गणतंत्र दिवस पर सरकार ने भी मुझे पद्मश्री देने की घोषणा की है, जिससे मैं बहुत खुश हूं।

आंकड़े

नागरिकता के लिए लंबित आवेदन

भारतीय नागरिकता के लिए सबसे ज्यादा लंबित आवेदन पाकिस्तान के नागरिकों का है। उसके बाद अफगानिस्तान और श्रीलंका के नागरिकों के आवेदन लंबित हैं।

पाकिस्तान 7,306	अमेरिका 223
अफगानिस्तान 1,152	नेपाल 189
श्रीलंका 223	बांग्लादेश 161

आंकड़े सर्वाधिक लंबित आवेदन वाले देशों की है। स्रोत-MHA

ब्रह्मा जी ने देवी से वीणा बजाने को कहा। जैसे ही उन्होंने वीणा बजाई, समस्त जीव-जंतुओं को वाणी प्राप्त हो गई।

वाणी की देवी

अंतर्यात्रा
संकलित

सृष्टि के प्रारंभिक काल में भगवान विष्णु की आज्ञा से ब्रह्मा जी ने मनुष्य योनि की रचना की। लेकिन वह अपनी सर्जना से संतुष्ट नहीं थे, जिसके कारण चारों ओर मौन छाया रहता था। तब ब्रह्मा जी ने भगवान विष्णु की स्तुति की। स्तुति सुनकर विष्णु जी उनके सम्मुख प्रकट हुए और उनकी समस्या जानकर उन्होंने आदि शक्ति दुर्गा का आह्वान किया। उनके आह्वान पर भगवती दुर्गा वहां प्रकट हुईं। तब ब्रह्मा एवं विष्णु जी ने उन्हें इस संकट को दूर करने का निवेदन किया। उसी क्षण आदि शक्ति दुर्गा माता के शरीर से श्वेत रंग का एक भारी तेज उत्पन्न हुआ, जो एक दिव्य नारी के रूप में बदल गया। यह स्वरूप एक चतुर्भुजी सुंदर स्त्री का था, जिनके एक हाथ में वीणा तथा दूसरे हाथ में वर मुद्रा थे। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक एवं माला थी। फिर उस देवी ने वीणा का मधुर नाद किया, जिससे संसार के समस्त जीव-जंतुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी। तब सभी देवताओं ने शब्द और रस का संचार करने वाली उन देवी को वाणी की अधिष्ठात्री देवी 'सरस्वती' कहा। वह दिन वसंत पंचमी का था। तभी से हर साल वसंत पंचमी के दिन देवी सरस्वती का जन्मदिन मनाया जाने लगा और उनकी पूजा की जाने लगी।

(अमर उजाला आर्काइव से)

शिलालेख

जो लिख चुका
वह सब मिथ्या है
उसे मत गहो!
जो लिखा नहीं गया
घुमड़कर भीतर ही रहा
वही सच है
जो मैं देना चाहता हूं!

-भारत भूषण अग्रवाल

उल्लास और उमंग की तरंग-वसंत के संग

वसंत जैसा उल्लास कलात्मक प्रवृत्तियों का विकास और ज्ञान संवर्धन का प्रयास ही वसंत पर्व की सार्थकता प्रदान कर सकता है।

डॉ. प्रणव पण्ड्या | **वसंतोत्सव**

प्रकृति अपने यौवन के साथ कण-कण में मधुरता, उत्साह, उल्लास बिखेरती हुई आती है, तो वसंत के आगमन की अनुभूति स्वयमेव हो जाती है। इस अनुभूति को संजोकर रखने, प्रेरणा ग्रहण करने के उद्देश्य से वसंत पर्व मनाना चाहिए। यह पर्व कला के विविध गुणों, शिक्षा, विद्या, साधना का पर्व भी है। अपूर्णता को पूर्णता में बदलने के प्रयास हेतु संकल्पित होने का पर्व है। अशिक्षित, गुणरहित, बलरहित, व्यक्ति को पशुतुल्य माना गया है। पशुता के घेरे से निकलकर मनुष्य जीवन के रूप में मिले स्वर्णिम अवसर को गंवाने के बजाय विद्या संपन्न, कलासंपन्न बनने की प्रेरणा के लिए ही यह महापर्व आता है।

भगवती सरस्वती के इस पावन अवसर पर उनकी कृपा प्राप्ति के लिए प्रार्थना, पूजा-अर्चना करनी चाहिए। कला, ज्ञान, संवेदना हमारे जीवन में आए, हमारे विचारों में आदर्शवादिता की उच्च स्तरीय सद्भावनाओं का समावेश हो। मनोयोग पूर्वक प्रार्थना से दिव्य शक्तियों के मानव रूप में चित्रित आकृति के प्रति सहज ही भाव संवेदना उभर आती है। इनकी साकार उपासना से हमारी आंतरिक चेतना भी देव गरिमा के अनुरूप परिणत हो जाती है। यह पूजा-अर्चना मात्र प्रतीक पूजन तक ही सीमित न रहे, अपितु शिक्षा की महत्ता को समझ स्वीकार कर अपने ज्ञान की परिधि को अधिकाधिक विस्तृत करने का प्रयास करना चाहिए। आज धन संग्रह करने, बढ़ाने की होड़ लगी हुई है। लोग इस तथ्य को भूल बैठे हैं कि ज्ञान की संपदा से बढ़कर और कोई संपदा नहीं। धन बढ़ाने व संग्रह करने की अपेक्षा यदि हम ज्ञान बढ़ाने व संग्रह संपादन करने की रीति-नीति अपना लें, तो हर क्षेत्र में निःसंदेह हम उत्कृष्ट बनते चले जाएंगे। हमारे जीवन का सर्वांगीण विकास होता चला जाएगा।

शिक्षा, साक्षरता के इस पर्व पर विद्या के वास्तविक स्वरूप को भी समझना आवश्यक है। आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र नौकरी प्राप्त करना हो गया है। इस विचार को बदलना आज अनिवार्य हो गया है। विद्या मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास, गौरव निखार के लिए है। शरीर के लिए भोजन की तरह ही विद्या मस्तिष्क की अनिवार्य आवश्यकता है। अपने दैनिक जीवन में स्वाध्याय को स्थान दें। जो शिक्षित हैं, उन्हें विद्या ऋण चुकाने के लिए अपने समीप के अशिक्षितों को शिक्षित करने हेतु संकल्पित होना चाहिए। हम ज्ञान की गरिमा-महिमा को समझने लग जाएं और हमारे अंतःकरण में उसके लिए तीव्र उत्कंठा जाग पड़े, तभी समझना चाहिए कि पूजन-वंदन की प्रक्रिया से विद्या के प्रकाश से हमारा कण-कण प्रकाशित हो गया। माता सरस्वती का वाहन मयूर है। प्रकृति ने मयूर को कलात्मक सुसज्जित बनाया है। हमारी अभिरुचि भी प्रेम, सौंदर्य स्वच्छता, सुसज्जनता के प्रति जागे। हमारा व्यवहार विनीत, शिष्टता व आत्मीयतायुक्त हो। वाद्य यंत्र, वीणा मात्र एक स्थूल वस्तु नहीं, अपितु मनुष्य की उदात्त भावनाओं और हृदय तरंगों को व्यक्त करने का सहयोगी साधन है। स्थूल व जड़ पदार्थ भी चेतनायुक्त तरंगों से स्वरलहरियों के संयोग से सूक्ष्म रूप में एक विशेष प्रकार की चेतना से युक्त हो जाते हैं। हम भी अपनी हृदय तरंगों को उदात्त भावनाओं में नियोजित करें। कलाप्रेमी बनें, कला के पुजारी बनें। साथ ही कला के संरक्षक भी बनें, कला को कुत्सित व अपवित्र होने से बचाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहें।

भगवती सरस्वती का अभिनंदन प्रकृति स्वयं वसंत अवतरण के रूप में करती है। प्रकृति के कण-कण में हंसी व मुस्कान के पुष्प खिल पड़ते हैं, उसी प्रकार जीवन में माता सरस्वती की कृपा अवतरित होने पर मुनष्य में स्वभाव, दृष्टिकोण क्रियाकलापों में वसंत ही वसंत दीखता है। कठिन से कठिन कार्य भी सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाते हैं। पेड़-पौधों पर आए फूल अपने व्यक्तित्व को निर्मल, निर्दोष आकर्षक व सुगंधित बनाने की प्रेरणा देते हैं। कोयल की मस्ती भरी कूक, भौरों की गुंजन, जीवन जीने की कला सिखाते हैं। हर जड़-चेतन में वसंत ऋतु में सृजनात्मक उमंग परिक्षित होने लगती हैं। इस उमंग को वासना से भावोल्लास के ऊर्ध्व स्तर पर विकसित किया जाना चाहिए। वसंत जैसा उल्लास कलात्मक प्रवृत्तियों का विकास और ज्ञान संवर्धन का प्रयास ही सच्चे अर्थों में वसंत पर्व की सार्थकता प्रदान कर सकता है।